ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-2* Issue-4* May-2017
Innovation The Research Concept

शोध पत्र : लेखन, आवश्यकता, महत्व एवं चुनौतियाँ

रवीन्द्र मोदी
शोध छात्र
भूगोल विभाग,
कोटा विश्वविद्यालय,
कोटा, राजस्थान

हमीद अहमद
विभागाध्यक्ष,
भूगोल विभाग,
राजकीय महाविद्यालय,
झालावाड़, राजस्थान

सारांश

संसार में अनेक प्राणी हैं। परन्तु मानव ही एक ऐसा प्राणी है, जो प्रारम्भ से ही अपने पर्यावरण के प्रति जागरुक एवं जिज्ञासु रहा है। उसने अपने तर्क, बुद्वि, चिन्तन, मनन आदि के द्वारा प्राकृतिक एवं सामाजिक पर्यावरण का अवलोकन किया। इन पर्यावरणों को नियंत्रित करने को वह निरंतर चिन्तलशील रहा है। वह निरन्तर खोज करता रहा कि किन परिस्थितियों में, किन–किन कारणों से कौन से परिणाम निकलते हैं। विभिन्न कारण किन समस्याओं को विकसित करते हैं तथा उन समस्याओं का निदान कैसे किया जा सकता है ? मानव की जिज्ञासा की प्रवृति का ही परिणाम है वह अपने चारों ओर की दुनियाँ को देखने व समझने का अनवरत प्रयास करता है।

जो जिज्ञासु व्यक्ति इन अनेक प्रकार के समस्याओं के उत्तरों को जानने का प्रयास करता है उसे शोधकर्त्ता कहा जाता है। प्राकृतिक विज्ञानों की खोज करने वाला प्राकृतिक शोधकर्त्ता कहलाता है। उसी भाँति समाज के सम्बंध में खोज करने वाले को सामाजिक शोधकर्त्ता कहा जाता है। शोध पत्र लेखन का प्रमुख उद्देश्य सामाजिक व व्यवहारिक व्यवस्था के उन नियमों की खोज करना है जिनके द्वारा यह व्यवस्था नियंत्रित, निर्देशित और संचालित होती है। इस प्रकार शोध क्षेत्र के क्रम में प्रश्नों के उत्तर खोजने का क्रम जब अनवरत चलता रहता है, तो वह शोध–पत्र लेखन का रुप ग्रहण कर लेता है।

व्यापक अर्थ में अनुसंधान (Research) किसी भी क्षेत्र में 'ज्ञान की खोज करना' या 'विधिवत गवेषणा' करना होता है। वैज्ञानिक अनुसंधान में वैज्ञानिक विधि का सहारा लेते हुए जिज्ञासा का समाधान करने की कोशिश की जाती है। नवीन वस्तुओं की खोज और पुराने वस्तुओं एवं सिद्धांतों का पुनः परीक्षण करना, जिससे की नए तथ्य प्राप्त हो सके, उसे शोध कहते है। सामान्यतः अनुसंधान अंग्रेजी के 'Research' शब्द से बना है, जो मुख्यतः दो शब्दों के संयोजन Re + Search क्रमशः दोबारा, पुनः खोज या नया कर अनुसंधान करने से है अर्थात् जिसकी पुर्व में खोज हो चुकी है, उसे आगे संशोधित कर तथ्यात्मक एवं वैज्ञानिक बनाकर और आगे बढ़ाना एवं लोगों के समक्ष प्रस्तुत करना शोध (Research) कहलाता है।

मुख्य शब्द : शोध, खोज, अनुसंधान, लेखन, पद्धति, निष्कर्ष, विश्लेषण, विवेचन

प्रस्तावना

व्यापक अर्थ में अनुसंधान (Research) किसी भी क्षेत्र में 'ज्ञान की खोज करना' या 'विधिवत गवेषणा' करना होता है। शोध पत्र का विज्ञान में बहुमुखी विकास के लिए अत्यंत महत्व हैं। शोध पत्र की कार्यप्रणाली मे एक वैज्ञानिक प्रशिक्षण की कमी के कारण अनेक बाधाएं शोधकर्ताओं के समक्ष उत्पन्न हो जाती हैं। शोध पद्धति एक व्यवस्थित अध्ययन है जो न एक तात्कालिक आवश्यकता हैं। शोध पत्र की प्रकृति तथा उद्देश्य वैज्ञानिक हैं। परन्तु कुछ चुनौतियाँ है, जो उसे पूर्ण रूप से वैज्ञानिक नहीं बनने देती हैं। शोध पत्र लेखन के अनेक महत्व और उपयोगिताएँ हैं लेकिन उसकी कुछ विशिष्ट समस्याएँ भी है, जैसे – घटनाओं की जटिलता, प्रकाशित आंकड़ों की समय पर उपलब्धता की कठिनाई, अवधारणा की समस्या, वस्तुनिष्ठता में कठिनाई, प्रयोगशाला का अभाव, मापन की समस्या, प्रमाणिकता व विश्वसनीयता की समस्या, उपल्बध विषय की जटिलता, शोध सामग्री की प्राप्ति की समस्या आदि चुनौतियों का सामना एक शोधकर्ता को करना पड़ता हैं।

परिभाषा

1. स्माल के अनुसार, '' इसके निम्नतम स्तर पर सरल अंग्रेजी में (अनुसंधान) केवल वस्तुओं की खोज निकालने का एक प्रयास है।''
2. स्पार एवं स्वेन्सन के अनुसार, '' कोई भी विद्वत्तापूर्ण अनुसंधान ही सत्य के लिए, तथ्यों के लिए, निश्चितताओं के लिए अन्तेषण है।''

शोध का उद्देश्य

इस लघु शोध–पत्र के मुख्य उद्देश्य निम्न हैं–

1. शोध पत्र लेखन में आने वाली समस्याओं पर विचार विमर्श कर प्रस्तुत करना।
2. शोध पत्र लेखन का प्रारुप प्रस्तुत करना।
3. शोध पत्र की आवश्यकता व महत्वत्ता को समाज के समक्ष प्रस्तुत करना।
4. शोध पत्र की आवश्यकता को उच्च शिक्षा में महत्वत्ता को बताना।
5. पत्र लेखन में होने वाली त्रुटियों का पूर्व निर्धारण कर सुधारने की विधि प्रस्तुत करना।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध पत्र के द्वारा शोध की महत्ता प्रस्तुत कर समाज में इसकी आवश्यकता को बताना है, किन्तु इस बीच कई समस्याए एवं चुनौतियाँ सामने आती है। शोध पत्र लेखन में सर्वेक्षण पद्धतियों का प्रयोग कर अध्ययन को अधिक विश्लेषणात्मक एवं वैज्ञानिक बनाया जाता है। शोध पत्र हेतु प्राथमिक व द्वितीयक स्त्रोतों, विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं की सहायता से आँकड़े एकत्रित कर उनका विश्लेषण कर निष्कर्ष पर पहुँचा जाता हैं। द्वितीय आँकड़ों को लघु शोध में प्रकाशित एवं अप्रकाशित स्त्रोतों से एकत्रित किये गये एवं उनका विस्तृत अध्ययन कर संश्लेषित किया गया। जिसे अध्ययन करते समय विभिन्न समस्यायें सामने देखने को मिली जो एक वैज्ञानिक शोध पत्र लेखन में अवधारणा के रुप में एक रुकावट बन सकती है। ये प्रमुख चुनौतियाँ है, जिसका सामना करना जरुरी हैं।

शोध पत्र लेखन

भौतिक विज्ञानों की तुलना में सामाजिक शोध–पत्र अधिक विस्तृत एवं जटिल है। सामाजिक शोध में भौतिक विज्ञानों की भाँति सामान्यीकरण की प्राप्ति के लिए वैज्ञानिक कार्य–विधि का प्रयोग किया जाता है। इस वैज्ञानिक कार्य–विधि के अनेक चरण हैं। जिनसे होकर शोधकर्त्ता को गुजरना पड़ता है। अर्थात् सामाजिक अनुसंधान क्रमबद्व व व्यवस्थित ढ़ग से किया जाता है जिससे प्रारम्भ से अन्त तक किसी भी स्तर पर किसी प्रकार की अस्पष्टता न रहे। चूँकि सामाजिक शोध का प्रत्येक चरण एक–दूसरे से सम्बद्ध रहता है, इसलिए यह एक निश्चित क्रम से एक चरण से दूसरे चरण में और दूसरे चरण से तीसरे चरण में, क्रमशः विभिन्न चरणों में होता हुआ आगे बढ़ता है।

शोध –पत्र लेखन के चरण

शोध –पत्र लेखन की प्रक्रिया के चरण

- समस्या का चयन
- सम्बंधित साहित्य का अध्ययन
- इकाइयों का निर्धारण
- प्राक्कल्पना का निर्धारण
- अध्ययन क्षेत्र का निर्धारण
- सूचनादाताओं का चयन
- सूचना के स्त्रोतों का निर्धारण
- उपकरणों तथा प्रविधियों का परीक्षण
- तथ्यों का सम्पादन, संकेतन, वर्गीकरण व सारणीयन
- तथ्यों का विश्लेषण व विवेचन
- सामान्यीकरण व नियमों का प्रतिपादन
- प्रतिवेदन का प्रस्तुतीकरण

समस्या का चुनाव

शोध –पत्र का सर्वप्रथम व सर्वाधिक महत्वपूर्ण चरण समस्या का चयन होता है। किसी भी नियम में चिंता तब होती है, जब व्यक्ति के समक्ष कोई समस्या होती है। लेकिन हर विचार या समस्या शोध का विषय नहीं हो जाता। अतः समस्या का चयन करते समय अनेक बातों को ध्यान में रखना आवश्यक होता है, जैसे– विषय से सम्बंधित आवश्यक तथ्य उपलब्ध हो सकेगें अथवा नहीं, समस्या से सम्बंधित अध्ययन का क्षेत्र क्या होगा, समस्या से सम्बंधित साहित्य उपलब्ध है अथवा नहीं एवं उन समस्या पर पूर्व में अध्ययन हो चुका है अथवा नहीं आदि–आदि। क्योंकि दोषपूर्ण समस्या के चयन से श्रम व साधन दोनों का अपव्यय होता है।

सम्बंधित साहित्य का अध्ययन

विषय पर उपलब्ध साहित्य का विस्तारपूर्वक अध्ययन शोध कार्य को सुगम बना देता है। इसलिए विषय से सम्बंधित लेख, पुस्तकें, पत्र व प्रतिवेदन आदि का गहराई से पठन–पाठन शोधकर्त्ता द्वारा किया जाना चाहिए। इस प्रकार के अध्ययन से अनुसंधान कार्य सरल हो जाता है।

इकाइयों का निर्धारण

इकाई का अर्थ है एकल सामाजिक स्थिति अथवा 'प्रघटना' जिसे कि सम्पूर्ण रुप में देखा जाता है। इकाइयों का निर्धारण करते समय इन बातो को ध्यान में रखा जाना आवश्यक है कि वे अध्ययन के उद्देश्य से सम्बन्धित हों तथा सम्पूर्ण समग्र की विशिष्ट प्रकृति की समरुपता के अनुसार चयनित हों। अस्पश्ट, अमानकीकृत, अप्रतिनिधित्वपूर्ण तथा संदीर्ष से बाहर इकाइयाँ अध्ययन की उपलब्धियों को अप्रामाणिक व अवैध बना सकती है।

प्राक्कल्पना का निर्धारण

प्राक्कल्पना एक कच्चा सिद्धान्त होता है जिसकी जाँच वैज्ञानिक अनुसंधान द्वारा की जाती है कि सही है अथवा गलत। प्राक्कल्पना शोध–कार्य को दिशा प्रदान

करती है, शोध के क्षेत्र को स्पष्ट करती है, इस कारण प्राक्कल्पना का निर्माण करना आवश्यक है।

अध्ययन–क्षेत्र का निर्धारण

शोधकर्त्ता के लिए शोध–क्षेत्र का निर्धारण करना आवश्यक होता है जिससे तथ्यों का वस्तुनिष्ठ तरीके से संकलन किया जा सके। अतः शोध–कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व शोधकर्त्ता को शोध–क्षेत्र का सुनियोजित तरीके से निर्धारण कर लेना चाहिए, जिससे क्षेत्रीय कार्य में लगे शोधकर्त्ताओं का ध्यान क्षेत्र–विशेष तक सीमित रह सके।

सूचनादाताओं का चुनाव

एक शोधकर्त्ता के लिए अध्ययन–क्षेत्र से सम्बंधित सभी इकाइयों से सम्पर्क कर तथ्य एकत्रीकरण करना दुश्कर कार्य होता है। अतः अध्ययन के लिए निदर्शन–प्रणाली का उपयोग किया जाता है, इस विधि के आधार पर समग्र का प्रतिनिधित्व इकाइयों का चयन शोधकर्त्ता निदर्शन या प्रतिचयनात्मक विधियों से करता है जिससे सूचनादाताओं का चयन वस्तुनिष्ठ तरीके से हो और किसी प्रकार की अभिनति की आशंका न रहे।

सूचना के स्त्रोतों का निर्धारण

सूचना स्त्रोत मुख्य रुप से दो प्रकार के होते हैं– (i) प्राथमिक स्त्रोत एवं (ii) द्वित्तीयक स्त्रोत। प्राथमिक स्त्रोत वे है, जहाँ पहली बार अनुसंधानकत्ताओं द्वारा सूचनाएँ संकलित की जाती है। द्वित्तीयक स्त्रोतों के अंतर्गत वे सूचनाएँ आती है, जो दूसरों के द्वारा संकलित की जाती हैं तथा जो प्रायः अनुसंधान ग्रंथों, प्रकाशनों, पत्र–प्रत्रिकाओं तथा मैगजीनों आदि से प्राप्त होती हैं। जनगणना रिपोर्ट, गजेटियर, पाण्डुलिपियाँ भी द्वित्तीयक स्त्रोत हैं।

उपकरणों तथा प्रविधियों का निर्धारण

उपकरणों व प्रविधियाँ जितने श्रेष्ठ व उच्च स्तर के होंगे, तथ्य का एकत्रीकरण उतना ही शुद्ध एवं विश्वसनीय होगा। इसमें अनुसूची, प्रश्नावली, साक्षात्कार हो सकते हैं।

उपकरणों तथा प्रविधियों का परीक्षण

अध्ययन में उपकरणों तथा प्रविधियों की जाँच हेतू पूर्व–परीक्षण आवश्यक होता है जिससे पूर्व में ही कमियों का पता लगाया जा सके और उन्हें सुधारा जा सके।

तथ्यों का अवलोकन एवं संकलन

तथ्यों की शुद्धता काफी मात्रा में उसकी संकलन–विधि पर निर्भर करती है अतः तथ्य संकलन में इस बात का ध्यान रखा जाए कि तथ्य पूर्णतया पक्षपातरहित हों तथा अन्वेषक प्रत्येक प्रकार के पूर्वाग्रहों से मुक्त हों। क्योंकि यदि तथ्य वास्तविक रुप में संकलित न होंगे तो उनसे निष्कर्ष दोषपूर्ण हो सकते हैं।

तथ्यों का सम्पादन, संकेतन, वर्गीकरण व सारणीय

शोधकार्य में विभिन्न तथ्यों को सम्पादित कर उसे उचित जरीके से संकेतन, वर्गीकरण एवं सारणीयन रुप में व्यवस्थित कर शोध कार्य को प्रभावी बनाया जा सकता है। क्योंकि कई बार अनुसंधान कार्य वैध होते हुए भी व्यवस्थित न होने के कारण प्रभावी नहीं होते। अतः शोध कार्य में सम्पादन, संकेतन, वर्गीकरण एवं सारणीयन का विशेष महत्व हैं।

तथ्यो का विश्लेषण एवं विवेचन

तथ्यो के विश्लेषण एवं विवेचन में वस्तुनिष्ठ सामग्री काम में आती है जो अनुसंधानर्ता को यह निश्चित कर लेना चाहिए कि किसी विशेष दशा, परिणाम अथवा के लिए कौनसे कारक जिम्मेदार है जिससे वैज्ञानिक निष्कर्ष निकालने में सहायता मिले।

सामान्यीकरण एवं नियामों का प्रतिपादन

सामान्यीकरण का तात्पर्य प्राप्त निष्कर्षो के आधर पर इस प्रकार व्याख्या करना है कि निदर्शन से प्राप्त निष्कर्ष सम्पूर्ण समग्र एवंज जनसंख्या के लिए भी लागू हो सके। तत्पश्चात् सामान्य नियम अथवा सिद्धांतो का निरूपण किया जाता हैं। तथ्यो के विश्लेषण व विवेचन के आधार पर अति–संक्षिप्त वैज्ञानिक निष्कर्ष निकाले जाते हैं जिनके आधार पर शोधकर्ता नियम निर्धारित करता हैं। अतः नियमो के निरूपण के समय भी सूक्ष्म अवलोकन, विस्तृत दृष्टिकोण एवं तर्कशील चितंन की आवश्यकता होती है, क्योकि नियमों का प्रतिपादन करना वैज्ञानिक शोध का सारतत्व होता हैं।

प्रतिवेदन का प्रस्तुतीकरण

अनुसंधान व शोध पत्र कार्य की सम्पन्नता के पश्चात् जब तक उसके परिणामों का वैज्ञानिक तरीके से प्रस्तुतीकरण नहीं हो पाता है, तब तक अनुसंधान की उपयोगिता कम ही ऑकी जाती हैं। अतः अनुसंधान प्रतिवेदन का प्रस्तुतीकरण आवश्यक हैं।

शोध पत्र की आवश्यकता व महत्व

शोध पत्र की आवश्यकता व महत्व अनेक प्रकार से हैं। यह मानव समाज का वैज्ञानिक पद्धति से अध्ययन करके हमें अनेक प्रकार से सहायता पहुँचाता है। समाज की संरचना कार्यो, संगठनो उनकी समस्याओं आदि का हमें ज्ञान प्रदान करता है। इस ज्ञान का उपयोग समाज के विकास की योजनाओं को बनाने में किया जाता हैं। समाज की क्या–क्या समस्याऍ है ? इन सबका ज्ञान सामाजिक अनुसंधान हमें समय–समय पर प्रदान करता हैं, जिसकी सहायता से समाज के विकास की योजनाऍ अच्छी बनाई जा सकती हैं और लक्ष्यों को सरलता से प्राप्त किया जा सकता है।

जिन्हें निम्न बिन्दुओं द्वारा समझा जा सकता है

1. अनुसंधान हमारी आर्थिक प्रणाली में लगभग सभी सरकारी नीतियो के लिए आधार प्रदान करता हैं।
2. अनुसंधान के माध्यम से हम वैज्ञानिक नीतियों का चिंतन करना और साथ ही साथ इन विकल्पो मे से प्रत्येक के परिणामों की जाँच कर सकते हैं।
3. रिसर्च सामाजिक रिश्तों का अध्ययन करने में सामाजिक वैज्ञानिको के लिए भी उतना ही महत्वपूर्ण हैं।
4. यह बौद्धिक संतुष्टि प्रदान करता हैं।
5. अनुसंधान ज्ञान की खातिर के लिए ज्ञान का फव्वारा हैं।
6. यह एक तरह का औपचारिक प्रशिक्षण हैं।
7. यह एक बेहतर तरीकों से एवं क्षेत्र में नए घटनाक्रम को समझने के लिए सक्षम बनाता हैं।
8. शोध पत्र नए सिद्धांतो का सामान्यीकरण मतलब हो सकता हैं।

9. शोध पत्र नई शैली और रचनात्मक के विकास का मतलब हो सकता हैं।
10. अज्ञानता का निवारण।
11. ज्ञान में वृद्वि।
12. समस्याओं का समाधान ।
13. सामाजिक नियंत्रण।
14. समाज सुधार।
15. भविष्यवाणी।
16. विज्ञानों का विकास।
17. प्रशासन मे उपयोगी।
18. सैद्धांतिक और व्यवहारिक महत्व।

शोध पत्र का विज्ञान में बहुमुखी विकास के लिए अत्यंत महत्व हैं। इन विज्ञानों के तथ्यों, सिद्धांतों तथा ज्ञान के विकास में शोध पत्र लेखन अनेक प्रकार से महत्वपूर्ण तथा उपयोगी हैं।

शोध पत्र लेखन में चुनौतियाँ

शोध पत्र की कार्यप्रणाली मे एक वैज्ञानिक प्रशिक्षण की कमी के कारण महान बाधा हमारे देश के शोधकर्ताओं के लिए उत्पन्न हो गयी हैं। कई शोधकर्ताओं शोध पत्र लेखन की विधियो को जानने के बिना ही अंधेरे में एक छलांग लगाने लगते हैं। शोध पद्धति एक व्यवस्थित अध्ययन है जो न एक तात्कालिक आवश्यकता हैं। इस को पूरा करने के लिए गहन पाठ्यक्रम प्रयासो को कम अवधि मे प्रदान करने के लिए बनाया जाना चाहिए। शोध पत्र की प्रकृति तथा उद्देश्य वैज्ञानिक हैं। परन्तु कुछ चुनौतियाँ है, जो उसे पूर्ण रूप से वैज्ञानिक नहीं बनने देती हैं। शोध पत्र लेखन के अनेक महत्व और उपयोगिताएँ हैं लेकिन उसकी कुछ विशिष्ट समस्याएँ भी है, जैसे –

1. घटनाओं की जटीलता
2. प्रकाशित आंकड़ों की समय पर उपलब्धता की कठिनाई।
3. अवधारणा की समस्या।
4. वस्तुनिष्ठता में कठिनाई।
5. प्रयोगशाला का अभाव
6. मापन की समस्या
7. प्रमाणिकता व विश्वसनीयता की समस्या।
8. उपलब्ध विषय की जटिलता।
9. शोध सामग्री की प्राप्ति की समस्या।

आदि चुनौतियों का सामना एक शोधकर्ता को करना पड़ता हैं।

निष्कर्ष

शोध पत्र लेखन के लिए पूर्व में शोध रणनीति का चयन एवं अनुसंधान डिजाइन बना कर उसके अनुरूप अपना कार्य सम्पादन करना चाहिए। जिससे एक अच्छे एवं वैज्ञानिक शोध पत्र बन सके। वैश्वीकरण के वर्तमान दौर में उच्च शिक्षा की सहज उपलब्धता और उच्च शिक्षा संस्थाओं को इसकी महत्वता को बढ़ावा मिले और शोध का क्षेत्र ओर विस्तृत हो सके एवं समाज के सामने नई–नई जानकारी प्राप्त हो और एक सुव्यवस्थित विकसित समाज का विकास हो।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *यादव हीरालाल, शोध–प्रनिधि एवं मात्रात्मक भूगोल, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 1994.*
2. *शर्मा वीरेन्द्र प्रकाश, रिसर्च मेथडॉलॉजी, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 2007.*
3. *भूगोल और आप, आइरिस पब्लिकेशन प्रा. लि. नई दिल्ली.*
4. *Ackoff R.L.: The Design of Social Research.*
5. *Hearring P.: Research for Publice Policy.*
6. *www.shodhganga.in.*